एस. एस. कॉलेज जहानाबाद
विभाग - हिन्दी
विषय - 'चन्द्रगुप्त नाटक'
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा भाग-1.
शिक्षण - वाट्स-एप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक, 20.8.20
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - अभिनेयता
प्रिय - छात्र - छात्राओं।

पिछली कक्षा में हमलोग इस नाटक की गीत योजना पर विचार कर रहे थे। आचार्य भरत ने जहाँ गीतों की योजना का निर्देश दिया है वहीं गीतों की बहुलता का निषेध किया है। स्वाभाविक है प्रसाद जी ने आचार्य भरत की दूसरी सम्मति पर विचार नहीं किया है। संस्कृत नाटकों में गीतों का व्यवहार बहुत संयमित और सीमित रूप में हुआ है। नाटकों में गीतों का व्यवहार कई रूपों में होता है। कुछ गीत नाटक के प्रमुख पात्रों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि चरित्र में और गीतों में निरन्तर सामंजस्य बना रहे। गीतों से ऐसा लगना चाहिए कि वे पात्र विशेष के अनुरूप हैं। प्रसाद के नाटकों में सर्वत्र इस बात पर ध्यान नहीं रखा गया है। उनके लगभग सभी प्रमुख पात्र गाते हुए दिखलाई देते हैं। पात्रों की प्रकृति के अनुरूप गीत होने से पात्रों के मनोभावों के चित्रण में सहायता मिलती है और पात्र विशेष की वैयक्तिकता भी भासित होती है।

नाटक के प्रसंगानुसार कुछ गीत गाये जाते हैं और कुछ गीत विशेष अवसरों पर — जैसे जन्म-दिन, विवाह आदि के अवसर पर सामूहिक रूप से भी प्रस्तुत किये जाते हैं। ऐसे गीतों की सार्थकता तभी हो सकती है जब वे प्रसंग के उपयुक्त हों। ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों में जैसा कि नाटककार के 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त' हैं में गीतों का बाहुल्य है। विशेषकर प्रस्तुत नाटक के द्वितीय दृश्य में सुवासिनी का भाव-प्रवण गान — 'तुम कनक किरन के अन्तराल में
लुक-छिपकर चलते हो क्यों

नत मस्तक गर्व वहन करते
यौवन के घन रस कन झरते
हे लाज भरे सौन्दर्य
बता दो मौन बने रहते हो क्यों
अधरों के मधुर कगारों में
कल-कल ध्वनि की गुंजारों में
मधु सरिता-सी यह हँसी तरल
अपनी पीते रहते हो क्यों
बेला विभ्रम की बीत चली
रजनीगंधा की कली खिली
अब सान्ध्य मलय-आकुलित
दुकूल कलित हो, यों छिपते हो क्यों?

अब नाटक के इस प्रथम गीत पर ही गौर करें — क्या इस गीत के भाव बिना व्याख्या किये स्पष्ट होते हैं? वास्तव में यह गीत ही यहाँ विशुद्ध छायावादी कविता है। आप भी विचार करें अगली कक्षा में पुनः इस पर चर्चा की जायेगी।

[illegible] 20.8.20